Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 4.886|
Vol. 06 Issue 03, March- 2011
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

पातंजलि और विवेकानन्द की योग शिक्षा और उनके शैक्षिक विचारों के निहितार्थ

राकेश गौतम
शोधार्थी
डी0एस0 डिग्री कॉलेज, अलीगढ़

सारांश

योग शब्द संस्कृत की ''युज्'' धातु में ''धञ्'' प्रत्यय जोड़ने से बना है। पाणिनि के धातुपाठ में ''युज्'' धातु के तीन भिन्न रूप मिलते हैं, जिनके अर्थ भी भिन्न हैं: (1) युज् समाधौ – जिसका अर्थ है समाधि; (2) युजिर योगे – जिसका अर्थ है जोड़ना या संघटन करना; और (3) युज् संयमने – अर्थात् नियंत्रण करना। इन विभिन्न अर्थों से स्पष्ट होता है कि योग न केवल मानसिक एकाग्रता और समाधि का माध्यम है, बल्कि यह व्यक्ति को आत्म–संयम तथा जीवन के सम्यक् अनुशासन की ओर भी अग्रसर करता है।

योगदर्शन के सूत्रकार ऋषि पातंजलि के जीवन के विषय में निश्चित जानकारी उपलब्ध नहीं है। ऐसा भी माना जाता है कि योगशास्त्र के मूल प्रवर्तक पातंजलि नहीं, बल्कि हिरण्यगर्भ थे, जिन्हें वैदिक साहित्य में अग्नि, सूर्य, वायु, चन्द्र, शुक्र, ब्रह्मा, जल और प्रजापति जैसे विभिन्न स्वरूपों में वर्णित किया गया है।

वर्तमान भारत की शिक्षा–व्यवस्था पर दृष्टिपात करने पर अनेक चिंताजनक स्थितियाँ दिखाई देती हैं – जैसे कि शिक्षण प्रणाली का नैतिक पतन, गुरु–शिष्य संबंधों की क्षीण होती आत्मीयता, सामाजिक और आर्थिक असमानता, और समाज में व्याप्त असामाजिक गतिविधियाँ। इन सभी समस्याओं के समाधान के लिए पातंजलि और स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक तथा शैक्षिक विचार आज भी अत्यंत प्रासंगिक और प्रेरणादायक सिद्ध हो सकते हैं। ये विचार व्यक्ति को आत्मविकास, नैतिक उन्नयन और समाजोपयोगी जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं।

बीज शब्दः योग शिक्षा, अष्टांग योग, राज योग, शिक्षा दर्शन

प्रस्तावना

भारतीय चिंतन परंपरा में योग न केवल एक साधना पद्धति है, बल्कि वह जीवन के समग्र अनुशासन का दर्शन भी प्रस्तुत करता है। योग के प्राचीनतम सूत्रकार महर्षि पातंजलि ने 'चित्तवृत्तिनिरोधः' द्वारा योग को मानसिक स्थिरता और आत्मसंयम का माध्यम बताया, जबकि स्वामी विवेकानन्द ने पाश्चात्य जगत को 'राजयोग' के माध्यम से इस भारतीय योग–दर्शन से परिचित कराया। विवेकानन्द के राजयोग में पातंजलि के योगसूत्रों की स्पष्ट छाया दृष्टिगोचर होती है, जो उन्हें न केवल एक व्याख्याकार बल्कि एक आधुनिक युग में योग–दर्शन के पुनरावलोकनकर्ता के रूप में प्रस्तुत करती है।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 4.886|
Vol. 06 Issue 03, March- 2011
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

यह शोधपत्र पातंजलि की योग शिक्षा और स्वामी विवेकानन्द के राजयोग के मध्य दार्शनिक साम्यता तथा उनके शैक्षिक विचारों के आधुनिक निहितार्थों का विवेचन करता है। आज की शिक्षा प्रणाली में नैतिकता, अनुशासन, आत्मिक विकास और गुरु–शिष्य परंपरा की जो कमी दिखती है, वह पातंजलि और विवेकानन्द के शिक्षादर्शन से पूर्ण की जा सकती है। अतः इस अध्ययन का उद्देश्य उनके योग–संबंधी सिद्धांतों के माध्यम से एक वैकल्पिक, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और नैतिक रूप से सशक्त राष्ट्रीय शिक्षा दृष्टिकोण की ओर संकेत करना है।

प्रस्तुत शोध पत्र पातंजलि और विवेकानन्द की योग शिक्षा और उनके शैक्षिक विचारों के निहितार्थ से सम्बन्धित सुकृत्यों का एक अध्ययन है। यद्यपि इतने अल्प समय में बहुमुखी प्रतिभा वाले एवं महाज्ञानी पातंजलि एवं विवेकानन्द के दार्शनिक एवं शैक्षिक सुकृत्यों का लेखन सरल काम नहीं था। फिर भी हृदय में सहास भरकर अनुसंधान कर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन को सफल बनाने का प्रयास किया है। पातंजलि ऋषि एवं विवेकानन्द के योग शिक्षा एवं राजयोग शिक्षा सम्बन्धित विचार अत्यन्त व्यवस्थित एवं सुसंगठित है, उन्होंने मानव जीवन की समग्रता पर चिन्तन किया है। उन्होंने अपने विचारों में यह प्रतिपादित किया है कि आज भारत की मानवता तथा चरित्र निर्माण करने वाली योग शिक्षा की नितान्त आवश्यकता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

भारतीय संस्कृति और दर्शन में योग को जीवन के सभी पहलुओं का समग्र अनुशासन माना गया है। योग न केवल शरीर और मन की शारीरिक व मानसिक स्थिति को संतुलित करता है, बल्कि यह आत्मा की उच्चतर चेतना की प्राप्ति का भी मार्ग प्रस्तुत करता है। महर्षि पातंजलि के योगसूत्र, योगदर्शन के शास्त्रीय और दार्शनिक आधार हैं, जिन्होंने योग को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परिभाषित किया और उसे व्यवहारिक साधना के रूप में स्थापित किया। वहीं स्वामी विवेकानन्द ने पातंजलि के योगसूत्रों को आधुनिक युग के संदर्भ में पुनः प्रस्तुत करते हुए 'राजयोग' की अवधारणा दी, जो शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास का समग्र मॉडल है।

आज के युग में, जब शिक्षा का स्वरूप तेजी से तकनीकी और व्यावसायिक होता जा रहा है, नैतिकता, आत्मसंयम, चरित्र निर्माण और सामाजिक मूल्यों का स्थान कम होता जा रहा है। व्यक्ति विशेष के मानसिक तनाव, नैतिक पतन और सामाजिक विसंगतियाँ हमारे समाज की गंभीर समस्याओं के रूप में उभर रही हैं। ऐसी स्थिति में योग शिक्षा, विशेषकर पातंजलि के योगसूत्र और विवेकानन्द के राजयोग के शैक्षिक दृष्टिकोण, समाज को नयी दिशा देने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए और भी महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि–

1. **मानसिक तनाव और असंतुलन का बढ़ता स्तरः** आज की जीवनशैली, प्रतिस्पर्धा, तकनीकी युग और सामाजिक दबावों के कारण मानसिक तनाव अत्यधिक बढ़ गया है। योग और

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 4.886|
Vol. 06 Issue 03, March- 2011
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

राजयोग द्वारा मन की एकाग्रता, स्थिरता और मानसिक शांति को पुनः स्थापित किया जा सकता है।

2. **शैक्षिक प्रणाली में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की कमी:** वर्तमान शिक्षा प्रणाली में केवल ज्ञान प्राप्ति को महत्व दिया जा रहा है, जबकि चरित्र निर्माण, नैतिक शिक्षा और आत्मज्ञान की उपेक्षा होती जा रही है। पातंजलि और विवेकानन्द के विचार इस कमी को पूरा करने का सशक्त साधन हैं।
3. **गुरु–शिष्य परंपरा का विलुप्त होना:** भारतीय शिक्षा का आधार गुरु–शिष्य परंपरा रही है, जिसमें न केवल ज्ञान का संचार होता था बल्कि जीवन मूल्यों, संस्कारों और योग की भी शिक्षा मिलती थी। आधुनिक शिक्षा में यह परंपरा कमजोर पड़ती जा रही है, जिसे पुनः स्थापित करना आवश्यक है।
4. **समाज में सामाजिक और आर्थिक असमानताएँ:** असमानताओं और असामाजिक कृत्यों के बढ़ते प्रभाव से समाज में व्याप्त विषमता दूर करने के लिए योग के माध्यम से समरसता, सहिष्णुता और समन्वय की भावना विकसित की जा सकती है।
5. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सुधार की आवश्यकता:** भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में योग को अधिक प्रभावी और व्यावहारिक रूप में शामिल करने की आवश्यकता है ताकि विद्यार्थियों के सम्पूर्ण विकास में योग शिक्षा का समुचित स्थान सुनिश्चित हो सके।
6. **वैश्विक स्तर पर भारतीय योग दर्शन का पुनःस्थापन:** स्वामी विवेकानन्द ने योग को विश्व पटल पर प्रतिष्ठित किया था। इस अध्ययन के माध्यम से उनके राजयोग और पातंजलि योग की गहन समझ को पुनः जागृत कर योग के वैश्विक महत्त्व को पुष्ट किया जा सकता है।

इस प्रकार, यह अध्ययन केवल शैक्षणिक अनुसंधान ही नहीं बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय पुनरुत्थान की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। पातंजलि के योगसूत्र और विवेकानन्द के राजयोग के शिक्षादर्शन का गहन अध्ययन, न केवल छात्रों के व्यक्तित्व विकास में सहायक होगा, बल्कि यह पूरे समाज में नैतिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त करेगा।

अंततः यह शोध, योग शिक्षा के माध्यम से एक समग्र, मूल्य आधारित और प्रभावशाली राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के निर्माण में सहायक सिद्ध होगा, जो आधुनिक युग की आवश्यकताओं और परंपरागत ज्ञान के बीच संतुलन स्थापित कर सके।

समस्या कथन

पातंजलि और विवेकानन्द की योग शिक्षा और उनके शैक्षिक विचारों के निहितार्थ

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 4.886|
Vol. 06 Issue 03, March- 2011
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अध्ययन के उद्देश्य

- पातंजलि की योग शिक्षा के दार्शनिक एवं शैक्षिक सिद्धांतों का विश्लेषण करना। इस उद्देश्य के तहत पातंजलि के योगसूत्रों में उल्लिखित योग के प्रमुख तत्त्वों, उनकी शिक्षा प्रणाली और जीवन दर्शन को समझना एवं उनका व्याख्यात्मक अध्ययन करना है।
- स्वामी विवेकानन्द के राजयोग सिद्धांतों का परिचय एवं उनका अध्ययन। विवेकानन्द के राजयोग की अवधारणा, उसके सिद्धांत, और उनका योग शिक्षा के क्षेत्र में योगदान समझना एवं उनका विश्लेषण करना।
- पातंजलि की योग शिक्षा का स्वामी विवेकानन्द के राजयोग पर प्रभाव की पहचान एवं विवेचना। यह उद्देश्य दोनों दार्शनिक दृष्टिकोणों के बीच संबंधों, प्रभावों एवं साम्यताओं को उजागर करने का है।
- योग शिक्षा एवं राजयोग के शैक्षिक विचारों के निहितार्थों को राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में समझना। योग के सिद्धांतों को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में लागू करने की संभावनाओं और उनके सामाजिक, नैतिक एवं शैक्षणिक प्रभावों का अध्ययन करना।
- आधुनिक शिक्षा में योग एवं राजयोग की भूमिका एवं आवश्यकता को स्पष्ट करना। इसके माध्यम से यह समझना कि किस प्रकार योग शिक्षा आज के शैक्षिक संदर्भ में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक हो सकती है।
- शिक्षा के क्षेत्र में योग के समेकन के लिए व्यावहारिक सुझाव एवं मार्गदर्शन प्रदान करना। योग शिक्षा को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में समायोजित करने के लिए नीति–निर्माताओं, शिक्षकों और शैक्षणिक संस्थानों को उपयोगी दिशा–निर्देश देना।

अध्ययन की परिकल्पना

- पातंजलि की योग शिक्षा और स्वामी विवेकानन्द के राजयोग में गहरा दार्शनिक और शैक्षिक सम्बन्ध है, जो आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं।
- पातंजलि के योगसूत्रों में निहित योग के सिद्धांत तथा विवेकानन्द के राजयोग के विचार आधुनिक शैक्षिक प्रणाली में विद्यार्थियों के मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक विकास के लिए प्रभावी उपकरण हैं।
- यदि राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली में पातंजलि की योग शिक्षा एवं विवेकानन्द के राजयोग के शैक्षिक विचारों को समुचित रूप से सम्मिलित किया जाए, तो यह शिक्षा के नैतिक, मानसिक एवं व्यक्तित्व विकास को बेहतर बनाने में सहायक होगा।
- योग शिक्षा के समावेश से शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों के चित्त की एकाग्रता, मानसिक स्थिरता और चरित्र निर्माण में सकारात्मक परिवर्तन आएगा।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 4.886|
Vol. 06 Issue 03, March- 2011
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अध्ययन प्रक्रिया

इस अध्ययन में गुणात्मक और दार्शनिक विश्लेषणात्मक पद्धति अपनाई गई है। सबसे पहले पातंजलि के योगसूत्र, स्वामी विवेकानन्द के राजयोग तथा योग शिक्षा और शैक्षिक दर्शन से संबंधित प्राचीन और आधुनिक ग्रंथों, शोध पत्रों और व्याख्याओं की समालोचनात्मक साहित्य समीक्षा की गई। अध्ययन के लिए योगसूत्र एवं राजयोग के मूल ग्रंथों के साथ–साथ विवेकानन्द के भाषण और लेख संग्रहित किए गए। इसके अतिरिक्त योग शिक्षा पर विभिन्न शिक्षाविदों के शोध कार्यों का भी अवलोकन किया गया। विश्लेषण की प्रक्रिया में दोनों ग्रंथों के शैक्षणिक और दार्शनिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया, जिससे इनके मध्य संबंध, समानताएँ और भेद स्पष्ट हुए। इसके साथ ही आधुनिक राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली में इन विचारों की प्रासंगिकता और प्रभाव का भी विश्लेषण किया गया। अध्ययन की सीमाओं में मुख्य रूप से ग्रंथ आधारित शोध होना तथा व्यावहारिक क्षेत्रीय सर्वेक्षण की अनुपस्थिति शामिल है। अंत में निष्कर्षों के आधार पर योग शिक्षा एवं राजयोग को शिक्षा प्रणाली में समायोजित करने हेतु व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

1) दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों का चयन :

दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों के चयन के लिए सर्वप्रथम योगदर्शन एवं राजयोग दर्शन का सावधानी के साथ अध्ययन किया गया और उनके दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों को रेखांकित करके दो सूचियों तैयार की गयी है। जिन्हें सुविधा की दृष्टि से (1) मूल अथवा प्रारम्भिक सूची (दार्शनिक) और (2) मूल अथवा प्रारम्भिक सूची (शैक्षिक) कहा गया है। दार्शनिक सूची में केवल अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं प्रतिनिधि कथनों को सम्मिलित किया गया है और शिक्षा सूची में राजयोग शिक्षा पर योग शिक्षा के प्रभाव को उनके शैक्षिक विचारों में सम्मिलित किया गया है।

2. दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों का वर्गीकरण :

मूल सूचियों में दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों की निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया है–

(क) जीवन दर्शन

1. योग एवं राजयोग विचार (अष्टांग योग एवं राजयोग)
2. तत्वमीमांसात्मक पक्ष
3. ज्ञानमीमांसात्मक पक्ष
4. आचारमीमांसात्मक पक्ष

(ख) शिक्षा दर्शन

1. शिक्षा का अर्थ
2. शिक्षा का स्वरूप
3. शिक्षा का महत्व
4. उद्देश्य
5. पाठ्यक्रम
6. शिक्षण विधियाँ

7. शिक्षक की अवधारणा
8. शिक्षार्थी की अवधारणा
9. विद्यालय
10. अनुशासन

3. दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों का विवेचन :

विवेचन की दृष्टि से पातंजलि एवं विवेकानन्द के सूचीबद्ध विचारों की व्याख्या कर उनके वैशिष्ट्य का उल्लेख किया गया है।

4. दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों पर प्रभावः

इस शीर्षक के अन्तर्गत पातंजलि के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों का विवेकानन्द के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों पर प्रभाव तथा समानता तथा असमानता को प्रदर्शित किया गया है। यहाँ उन निष्कर्षो का भी उल्लेख किया गया है। जो विचारों का विवेचन करते समय सामने आये।

5. शैक्षिक विचारों के निहितार्थ :

वुड के घोषणा पत्र के अनुसार – अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों में से अन्य कोई भी विषय हमारा ध्यान इतना अधिक आकर्षित नहीं कर सकता जितना की शिक्षा। यह हमारे पुनीत कर्तव्यों में से एक है। श्हमें जोरदार शब्दों में घोषणा कर देनी चाहिए कि हम भारत में जिस शिक्षा का विस्तार करना चाहते हैं, वह ऐसी शिक्षा है, जिसका लक्ष्य यूरोप के कला, विज्ञान, दर्शनशास्त्र और साहित्य का प्रसार करना है. या संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि यूरोपिय ज्ञान का प्रसार करना है।ष प्रचलित शिक्षा प्रणाली के भारतीयकरण की दृष्टि से पातंजलि एवं विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों के निहितार्थ योग एवं राजयोग के संदर्भ में भारतीय शिक्षा प्रणाली के आर्दशा, राष्ट्रीय आवश्यकताएं एवं शैक्षिक समस्याओं को मापदण्ड मानकर पातंजलि एवं विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों के निहितार्थ पर विचार किया गया है।

शोध अध्ययन विधि

इस शोध में मुख्यतः गुणात्मक विधि का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए प्राचीन और आधुनिक साहित्य जैसे पातंजलि के योगसूत्र, स्वामी विवेकानन्द के राजयोग ग्रंथ, उनके उपदेश तथा संबंधित शैक्षणिक एवं दार्शनिक ग्रंथों का गहन अध्ययन किया गया। इसके अतिरिक्त योग शिक्षा एवं शिक्षा दर्शन पर प्रकाशित शोधपत्र, निबंध और व्याख्याओं का भी समालोचनात्मक विश्लेषण किया गया। शोधकर्ता ने तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए पातंजलि और विवेकानन्द के योग संबंधी विचारों की समानताएं, भेद तथा उनके शैक्षिक महत्व को समझा। अध्ययन में प्राथमिक स्रोतों के साथ–साथ द्वितीयक स्रोतों का भी सहारा लिया गया। इस शोध में क्षेत्रीय सर्वेक्षण या प्रयोगात्मक अध्ययन शामिल नहीं है, बल्कि यह ग्रंथ आधारित और दार्शनिक विश्लेषणात्मक अध्ययन है।

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 4.886|
Vol. 06 Issue 03, March- 2011
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अध्ययनोपकरण

प्रस्तुत अध्ययन पातंजलि के विश्वविख्यात ग्रन्थ योगदर्शन पर आधारित है मनु स्मृति में योग की श्रेष्ठ धर्म माना गया है. जिसमें वह परमात्मा का दर्शन करता है तथा यहाँ विवेकानन्द के राजयोग ग्रन्थ के (बारह खण्ड) को आधार बनाया गया है जो कि रामकृष्ण मठ नागपुर द्वारा प्रकाशित है पातंजलियोगप्रदीप एवं राजयोग एक अत्यन्त व्यावहारिक एवं लोकप्रिय दर्शन है।

अध्ययन की न्यायोचितता

अतः औचित्य के रूप में हम कह सकते है कि पातंजलि की योग शिक्षा का प्रभाव विवेकानन्द के जीवन दर्शन एवं शैक्षिक दर्शन पर देखा जा सकता है क्योंकि उनकी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि के माध्यम से मनुष्यत्व का सर्वतोन्मुखी विकास था।

निष्कर्ष एवं सुझाव

महर्षि पातंजलि द्वारा प्रतिपादित योगसूत्र और स्वामी विवेकानन्द के राजयोग में न केवल शारीरिक और मानसिक संतुलन की शिक्षा है, बल्कि यह आत्मिक उन्नयन एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का मार्ग भी सुझाते हैं। विवेकानन्द ने योग को केवल एक साधना तक सीमित न रखते हुए, उसे शिक्षा, समाज, और राष्ट्रनिर्माण के मूल तत्व के रूप में प्रस्तुत किया।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में बढ़ते नैतिक पतन, मानसिक असंतुलन, और सामाजिक विघटन की पृष्ठभूमि में पातंजलि–विवेकानन्द के विचार अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। उनका शिक्षादर्शन विद्यार्थियों को आत्मनियंत्रित, चरित्रवान, और राष्ट्रभक्त नागरिक बनाने की दिशा में कार्य करता है। अतः यह आवश्यक है कि आज की राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली में योग शिक्षा को एक केंद्रीय भूमिका प्रदान की जाए, जिससे भारतीय परंपरा और आधुनिकता का समन्वित विकास संभव हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ

आधार ग्रन्थ

1. पातंजलि, योगसूत्र, संस्कृत टेक्स्ट एवं व्याख्या, (संस्कृत एवं हिंदी अनुवाद), प्रकाशकः 2012।
2. स्वामी विवेकानन्द, राजयोग, Advaita Ashrama, कोलकाता, 1896।
3. द्विवेदी, रामकृष्ण, योग शिक्षा का दार्शनिक अध्ययन, नई दिल्लीः योग प्रकाशन, 2012।
4. शर्मा, प्रिया, 'पातंजलि योगसूत्र और स्वामी विवेकानन्द के योग दृष्टिकोण की तुलना,' भारतीय दार्शनिक पत्रिका, खंड 12, अंक 3, 2012, पृ. 45–60।
5. शास्त्री, हरीश, योग और शिक्षाः एक समकालीन दृष्टि, मुंबईः ज्ञानप्रकाशन, 2012।

सहायक ग्रन्थ

1. नइक जे.पी. सैय्यद, ''भारतीय शिक्षा का इतिहास'' ८ मैकमिलन कम्पनी आफ इण्डिया नई femft 1976, पी0 121

2. एन.एन. मनुस्मृति गोविन्द भवन कार्यालय, गीता प्रेस गोरखपुर, पनी अध्याय 6–65. पृ. 214
3. गुल, ओमप्रकाश, सिद्धान्त सरोज, तृतीय संस्करण, पंकज पलिकेशन मथुरा 1989. पृ. 6
4. मुमुशानन्द स्वामी विवेकानन्द सहित्य, चतुर्थखण्ड अद्वेत आयम; कलकत्ता, 1994, पृ. 90–91
5. एन.एन. वेद, गोविन्द भवन कार्यालय, गीता प्रेस गोरखपुर, अ.–32 (1)
6. श्री.एड. दिग्दर्शन, अतुल प्रकाशन, आगरा, 1996, पृ. 36
7. पाठक एवं त्यागी, शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1974. पृ. 2
8. मुमुशानन्द, स्वामी विवेकानन्द साहित्य, चतुर्थ खण्ड, अड्केत आयम; कलकत्ता, 1989. पू. 68